

अल्पमेयम् (अ० + मे०) adj. von geringem Verstande, dumm P. 5, 4, 122, Sch. Vop. 6, 27. कृत्पण. 1, 8. पा०. II, 92.

अल्पपच (अल्पम्, acc. von अल्प, + पच) adj. wohl = मितपच geizig Vop. 26, 55.

अल्पशः पङ्क्ति (अ० + प०) f. N. eines Metrums Verz. d. B. H. No. 383. अल्पशम् (von अल्प) adv. in geringem Maasse, vereinzelt, wenig: अल्पश इव प्राप्नोति Çat. Br. 4, 6, 5. वृद्धो ददाति आभ्युदयिकेषु । अल्पशः आदिषु P. 5, 4, 42, VArtt., Sch. अल्पशो (= अल्पाभ्यो) दृष्टि 6, 3, 35, VArtt. 1, Sch. Vop. 7, 68. selten, nur dann und wann P. 2, 1, 38. Gegens. प्रायशम् M. 12, 20, 21.

अल्पसरम् (अ० + स०) n. ein kleiner Teich AK. 1, 2, 2, 28.

अल्पाञ्जि (अ० + अञ्जि) adj. fein gesteckt VS. 24, 4.

अल्पायुम् (अ० + आयु०) 1) adj. ein kurzes Leben habend M. 4, 157. — 2) m. Ziege Triak. 2, 9, 25.

अल्पित (von अल्प) adj. verkleinert, verringert Naish. 1, 15.

अल्पेशाव्य (von अल्प - ईश + आख्या) adj. den Namen eines kleinen Herrn führend, von niedriger Herkunft (Gegens. महेशाव्य) Ayad. Çat. in Burn. Intr. 239, N. 1.

अलम N. pr. Verz. d. B. H. No. 647 (S. 196, Z. 11).

अल्ला f. Mutter, voc. अल्ल P. 7, 3, 107, Sch. Vop. 3, 76.

अल्लाउ oder अल्लाल N. pr. अल्लाउनाथ Verz. d. B. H. No. 1170. अल्लालमूरि 643. — Steht zu अल्ला in demselben Verhältniss wie अम्वा-उ und अम्वाला zu अम्वा.

अक् (अ०, aveo), अक्वति Dhātup. 15, 91. आविषम्, आवीत्; imperat. ved. आविष्टुं, आविष्टुं, आविष्टुं (अवित्); आव; आविष्यति; inf. ved. अक्वित्वे; gerund. veu. आव्य; partic. ऊत (in वेत) und अक्वित. Das अक् in अक्व्यात् u. अक्वतु angeblich nicht elid. im Veda P. 6, 1, 116. 1) Freude haben, sich gütlich thun, sich sättigen an Etwas (loc.) Naigh. 2, 8. मेदेषु वृष-भृशो यदाविष RV. 1, 131, 5. उत नो ब्रह्मन्नविषा उक्थेषु 3, 13, 6. कर्मसु नो ऽवत VS. 20, 74. आ च नो वरिहः सदताविता च न स्पार्हाणि दातवेषु RV. 7, 59, 6. प्राग्दृष्टो न यवसे ऽविष्यन् 3, 2. तृष्विष्यन्तसेषु तिष्ठति 1, 38, 2. 8, 36, 2. 10, 15, 1. 120, 7. — 2) Jemand wohlthun, gütlich thun, sättigen: यत्पुंस्यः पृथिवीं रेतसावति (vgl. AV. 8, 7, 21) RV. 5, 83, 4. मित्रावरुणौ त्वा वृष्टावताम् VS. 2, 16. इत्या सुतः पौर इन्द्रमाव RV. 2, 11, 11. आवदिन्द्रं यमुना तृप्तवश्च 7, 18, 19. आ धेनवो मामतेयमवतीर्त्तुप्रियं पीपयन् 1, 132, 6. न मे ह्रादवित्वे वसिष्ठाः mögen die Vasishtha nie fern von mir sein, um mir gütlich zu thun (Indra spricht) 7, 33, 1. (अन्नं) यद्रूपे किनस्ति तद्यत्कनीयो न तदवति zu viel (Speise) schadet, zu wenig sättigt nicht Çat. Br. 7, 2, 2, 17. यद्रौ जुहति तदनानवति 1, 3, 2, 16. 4, 4, 4. 6, 2, 37. 7, 5, 1, 14. 8, 2, 1, 5. 10, 4, 1, 3. 14, 20. अक्रमन् — अक्रमन्नादः — यो मा ददाति स इदं मांश्वाः Taitt. Up. 3, 10, 6. सह नावतु । सह नो भुनक्तु । सह वीर्यं कर्वावैह 3, 11. क्षत्रियास्तकारणो ऽपि विक्रमस्तेन मामवति (befriedigt) नाजिते त्वयि Ragh. 11, 75. — 3) gern haben, wünschen, lieben: तं रेतता मरुतो यमावत RV. 1, 168, 8. 13. न मूषा आतं यदवति देवाः 179, 3. सद्यो हं ज्ञातो वृषमः कनीयः प्रभर्तुमावदन्धसः सुतस्य 3, 48, 1. विश्वा हि माया अर्वसि 6, 58, 1. यत्सत्यं यतरदकीयस्तदित्सोमो ऽवति कृत्यामस्तु 7, 104, 12. न मामवति सद्यो रा त्वसूर्यो मोदिनी ॥ Ragh. 1, 65. अक्वित n. Gefallen, Freude, s. अद्यावित. —

4) an Etwas Gefallen finden, sich Etwas angelegen sein lassen, beachten: अक्वतं धियं मे RV. 2, 40, 5. अस्मां अक्वतु ते धियः 8, 3, 1. नरो यदा-मश्निना स्तोममावन् 4, 44, 7. अक्विष्टना पैजवनस्य कर्तम् 7, 18, 25. अया धिया मन्वे अक्विष्टमाव्या साकं नरो दंसनैरा चिकित्त्रिरे 1, 166, 13. 129, 4. 182, 4. 2, 12, 14. 3, 8, 8. 62, 8. 4, 33, 3. 7, 64, 5. 8, 81, 15. 83, 13. VS. 29, 8. AV. 5, 27, 8. 7, 20, 5. SV. 1, 2, 1, 2, 2. देवचितं त्वावतु मा मनुष्यचितम् Çat. Br. 11, 8, 2, 9. 1, 7, 4, 21. 2, 1, 2, 2. — 5) begünstigen, fördern, ermuthigen, helfen, schützen: स पैवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय कृत्वे RV. 9, 61, 22. पुत्रेन यज्ञमव पत्नियः सन्यस्तं वज्रमकृत्वा अक्वतु 3, 32, 12. अन्या वो अन्यामवतु 10, 97, 14. अक्विष्टोन्द्रं चित्रया न ऊती 2, 17, 8. अस्मां अक्व मधवन्गोमति व्रजे 8, 59, 6. 1, 23, 12. 24, 3. 27, 7. 76, 2. 110, 9. 132, 6. 181, 7. 185, 4. 9. 2, 12, 14. 30, 6. 8, 9, 5. 9, 83, 2. 10, 80, 3. 108, 2. VS. 2, 9. AV. 2, 13, 5. 3, 19, 5. 4, 29, 3. 14, 1, 35. 19, 72, 1. Çat. Br. 1, 8, 4, 28. Nir. 3, 9. सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु Taitt. Up. 1, 1, 12. प्रत्यक्षाभिः प्रसन्नस्तुनभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरिषः Çak. 1. यमवतामवतां (der Schützenden, Regierenden) धुरि स्थितः Ragh. 9, 1. अक्वित beschützt, erhalten AK. 3, 2, 55. H. 1497. Im Dhātup. werden dieser Wurzel folgende Bedeutungen gegeben: रत्नाण, गति (vgl. Naigh. 2, 14), कान्ति, प्रीति, तृप्ति, अवगम, प्रवेश, अवण, स्वाम्यर्थ (Andere: सामर्थ्य), याचन (oder अर्थन), क्रिया, इच्छा (oder काम), दीप्ति, अक्वति, अक्लिङ्गन, हिंसा, आदान (Andere: दान), भाव (Andere: भाग), वृद्धि; KĀTANTRA RUF: पालन. — caus. अक्वपति (die Betonung अक्वपति Naigh. 2, 8 scheint auf unrichtiger Ableitung von वी mit आ zu beruhen; die Texte haben nur imperf.-Formen) verzehren: एवौ वृषमा सुते ऽसिन्वन्भीषयः RV. 8, 45, 38. अग्निं जग्मैस्तृष्वन्मावयत् 10, 113, 8. सुपर्णस्त्वा गृह्णन्मावयत् प्रथममावयत् AV. 4, 6, 3. अक्विस्तो-कान्यावयत् 5, 19, 2. मेघस्य कृविष अक्वयत् VS. 21, 44. Çat. Br. 1, 6, 2, 5. 5, 5, 4, 6. — अनु aufmuntern, ermuthigen: अनु त्रितस्य युध्यतः प्रुममाववतु क्रतुम् RV. 8, 7, 24.

— उट् 1) beachten, auf Etwas merken: भग्नेमा धियमुदवा ददन् RV. 7, 41, 3. — 2) lauern: उद्वतौ वृकाविव AV. 7, 93, 2. — 3) fördern, antreiben: अस्माकमंशमुदवा भेरौ भेरौ RV. 1, 102, 4. इन्द्र उदवावतिमग्र्यानाम् 10, 102, 7.

— उप lieblosen, freundlich thun, ermuthigen; mit dat. oder acc.: वृषारवायु वदते यडुपावति विञ्चिकः RV. 10, 146, 2. किं स्विपुत्रेभ्यः पितरा उपावतुः 1, 161, 10. पुत्रो मातरौ विचरतुपावसि 10, 140, 2. अन्यान्यस्या उपावत 97, 14. गाव उपावतावतम् 8, 61, 12. सीसायाद्याह वरुणः सीसायामिरुपावति AV. 1, 16, 2. उप हि द्वितीया ऽवति Çat. Br. 3, 7, 2, 9.

— प्र 1) beachten, auf Etwas merken: विश्वा धियो अश्निना प्रावतं नः RV. 1, 117, 23. प्र सुन्वत स्तुवतः शंसमावः 33, 7. 31, 8. 10, 26, 1. 97, 17. प्राव मे वचः AV. 13, 1, 42. — 2) sich Jemandes annehmen, ermuntern, zu Etwas verhelfen: इन्द्रः समत्सु यज्ञमानमार्यं प्रावत् RV. 1, 130, 8. प्रावन्वाणीः पुरुहूतं धर्मन्ती 3, 30, 10. प्रावीन्तु वीरो ऽर्त्तरामूती 7, 20, 2. 1, 4, 8. 33, 14. 36, 17. 47, 5. 51, 5. 81, 1. 2, 15, 9. 7, 19, 3. 8, 3, 12. 49, 10. 10, 103, 7. (अग्निः) यमिमा विश्वाः प्रावतु जूतेय 1, 127, 2. 102, 3. 5, 46, 7. यज्ञं प्रावतु नः प्रुभे VS. 18, 76. तास्वो पुत्रविद्योय देवीः प्रावन्नोषधयः AV. 3, 23, 6. इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावतोके तनेये तृत्ताना RV. 7, 84, 5. — 3) befriedigen, sättigen: यदेवतो ललामग्रे प्र विष्टीमिन्माविषुः VS. 23, 29. मेवाः प्रावतु पृथिवीमनु AV. 4, 13, 9.